सितम्बर 2017

वर्ष 30 द्वितीय अंक

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

9 लक्ष्योन्मुखी भविष्य के प्रति सचेत विद्यार्थी

विशेष स्तम्भ

10 स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्र के नाम नवनिर्वाचित राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद का संदेश

11 स्वतंत्रता दिवस पर राष्ट्र के नाम प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सम्बोधन में भी नए भारत का संकल्प

12 समसामयिक सामान्य ज्ञान

17 आर्थिक परिदृश्य

23 राष्ट्रीय परिदृश्य

29 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

32 क्रीड़ा जगत्

35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

36 सारभूत तत्व कोष

40 युवा प्रतिभाएं

42 विज्ञान समाचार

लेख

43 सामयिक लेख—गोरखालैंड की माँग और कुंठाएं

45 वायरल करेंसी लेख—बिटकॉइन : आहट एक नई वर्चुअल करेंसी की

हल प्रश्न-पत्र

48 रेलवे भर्ती बोर्ड गैर-तकनीकी (एनटीपीसी) परीक्षा, 2016

स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया पी.ओ. (प्रा.) परीक्षा, 2016

57 तर्कशक्ति योग्यता

60 English Language

63 संख्यात्मक अभियोग्यता

67 उत्तराखण्ड अध्यापक पात्रता परीक्षा, 2015 (प्रथम प्रश्न-पत्र)

81 मध्य प्रदेश सब-इंस्पेक्टर पुलिस भर्ती परीक्षा, 2016

92 मध्य प्रदेश सहायक अंकेक्षक, सहायक लेखा-अधिकारी, लेखाकार संयुक्त भर्ती परीक्षा, 2017

104 एस.एस.सी. मल्टी टास्किंग (गैर-तकनीकी) स्टॉफ परीक्षा, 2016

115 मध्य प्रदेश पुलिस कॉंस्टेबिल भर्ती परीक्षा, 2016

122 आगामी बिहार पुलिस सिपाही भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

127 ज्ञान वृद्धि कीजिए

129 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. —सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

लक्ष्योन्मुखी भविष्य के प्रति सचेत विद्यार्थी

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

भविष्य उनका है जो अपने सपनों की सुन्दरता में विश्वास रखते हैं.

—**एलीनॉर रूज़वेल्ट**

बहुत से विद्यार्थी अपनी जिन्दगी को एक अलग ही आयाम में देखते हैं. उन विद्यार्थियों को ऐसा लगता है बस अभी पढ़ लूँगा, अभी फर्स्ट आ जाऊँगा और फिर अपना कैरियर बहुत अच्छा बनाऊँगा और मेरी जिन्दगी सफल हो जाएगी. महत्वाकांक्षाओं से भरे होते हैं और वे विद्यार्थी अपनी आकांक्षाओं के तहत् उड़ भी रहे होते हैं, लेकिन एक गलती हो जाती है कि वे अपनी आकांक्षाओं को इतना ज्यादा वर्तमान में जी लेते हैं कि लगातार एक नए तरह का तनाव उनके भीतर पैदा हो जाता है और इस तनाव का दूसरा छोर उनके सामने तब प्रकट होता है जब उनकी महत्वाकांक्षाओं को चुनौतियाँ मिलना प्रारम्भ होती हैं और उनकी महत्वाकांक्षाएं किसी समय कमजोर पड़ जाती हैं और तब आकाश में उड़ता हुआ वह पंक्षी जमीन पर गिर पड़ता है. ऐसे युवा प्रायः अवसाद में चले जाते हैं. ऐसा बहुतों के साथ आज के युग में देखने को मिल रहा है कि लोग कल्पनाओं में दौड़ लेते हैं, लेकिन वास्तविक धरातल पर आए हुए अप्रत्याशित विपरीतताओं और प्रतिकूलताओं के सामने उन्हें अपने घुटने टेकने पड़ते हैं. पुराने विद्यार्थी भी ऐसा ही किया करते थे. जरा हम खोजें, तो पुराने गुरुकुल में गुरुकुल पद्धति में विद्यार्थियों को कैसे सोचना सिखाया जाता था और आज के विद्यार्थियों को कैसे सोचना सिखाया जाता है ? आज के विद्यार्थियों को सपने दिखाए जाते हैं, आने वाले कल के कि आपको क्या बनना है ? लेकिन पुराने गुरुकुलों में छात्र को आज कैसे जीना है ये सिखाया जाता था, प्रत्येक क्षण का सदुपयोग कैसे करना ? ये सिखाया जाता था, अपनी आत्मिक क्षमताओं को, शारीरिक क्षमताओं को, मानसिक क्षमताओं को कैसे विकसित करना, चुस्त-दुरुस्त करना, सशक्त बनाना वह सिखाया जाता था. अचानक कोई भी खतरा आ जाय, जिन्दगी में अचानक कोई भी ऐसा पल आ जाए जहाँ पर हमें संघर्ष करना पड़े, तो उन संघर्षों में हमें संभलना कैसे, सजगतापूर्वक प्रतिवाद कैसे करना ? ये सिखाया जाता था, किन्तु आज सुख-सुविधा, सम्पन्नता, बड़ा पद, बड़ा नाम, बड़ा औहदा इन सबका सपना दिखाया जाता है. अचानक कोई संकट आए तो उससे कैसे जूझते हैं, ये नहीं सिखाया जाता. आज इच्छाशक्ति सुदृढ़ नहीं हो रही, बल्कि इच्छाशक्ति काल्पनिक सुखों को भोगते-भोगते कमजोर हो रही है. आज का जगत् पहले की तुलना में अधिक चुनौतियों-भरा है. संचार और सम्प्रेषण की अत्याधुनिक तकनीक ने लोगों को काफी बड़ी सीमा तक एकसूत्र में बाँध दिया है. इण्टरनेट के माध्यम से सामान्य जानकारी से लेकर अत्याधुनिक शैक्षणिक पाठ्यक्रमों तक लोगों की सर्वव्यापी पहुँच है. आज के विद्यार्थी को ज्ञान प्राप्त करने के लिए पुस्तकालयों की खाक छानने के बजाय लैपटॉप, डेस्कटॉप, स्मार्ट फोन पर ही सारी सामग्री उपलब्ध है. इन सबके बीच युवाओं को अपना कैरियर संवारने के अनेक अवसर विद्यमान हैं. अपनी रुचि, ज्ञान व कौशल के अनुसार युवा अपना लक्ष्य निर्धारित कर उसे पाने के लिए आगे बढ़ सकते हैं. ज्ञान और कौशल की प्राप्यता जितनी सुलभ है उतनी ही चुनौतीपूर्ण है. जाति, धर्म, लिंग, नस्ल, क्षेत्रीयता आदि के आधार पर बिना किसी भेदभाव के ज्ञान एवं कौशल सम्भाव्य जानकारी तक सभी की पहुँच है. जिसका लाभ उठाकर लक्ष्य तक पहुँचा जा सकता है.

●●●